शाश्वत राष्ट्रबोध

प्रकाशन तिथि ०१-०७-२०१९

वर्ष - ३० अंक - ७ जुलाई २०१९ विक्रम संवत् २०७६ पृष्ठ - २० सहयोग राशि - ५.००

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संघ शिक्षा वर्ग, तृतीय वर्ष, नागपुर (महाराष्ट्र) समापन समारोह - 16-06-2009

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संघ शिक्षा वर्ग, द्वितीय वर्ष, बिलासपुर (छ.ग.) समापन समारोह - 13-06-2019

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, छत्तीसगढ़ प्रान्त, महाविद्यालयीन प्राथमिक शिक्षा वर्ग, राजनांदगांव (छ.ग.) 22 से 30 जून 2019

सुभाषित

येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

अर्थात्– जिन लोगों के पास न तो विद्या है, न तप, न दान, न शील, न गुण और न धर्म। वे लोग इस पृथ्वी पर भार हैं तथा मनुष्य के रूप में मृग/पशु की तरह से घूमते रहते हैं।

संपादकीय

समाज के साथ–साथ राष्ट्र के कल्याण हेतु चिंतन मनन कर व्यवहारिक पद्धति विकसित करने वाली हमारी ऋषि–परम्परा सदियों से महत्वपूर्ण मानी जाती रही है। वसुधा के कल्याण की भावना से संकल्पित शक्ति–पुंज का युग के अनुरुप शिक्षण–प्रशिक्षण आवश्यक होता है और यही समर्पित भाव से कार्य करने हेतु प्रेरित कर समाज के प्रत्येक को राष्ट्रोत्थान के पुनीत कार्य में लगाता है।

वर्षों की साधना के फलस्वरुप बनी अनुकूल परिस्थितियों में भी हमें संयम के साथ अपने अधिष्ठान को प्राप्त करना है। परिवेश के सुदृढ़ीकरण हेतु विभिन्न घटकों की सहायता से किये जा रहे प्रयास फलीभूत होकर माँ भारती को वैभव–संपन्न बना रहे हैं। अन्यायी, अत्याचारियों को भी उचित सीख मिलने पर ही नियंत्रित किया जा सका है, यह शाश्वत सत्य है। योग जैसे हमारे स्थापित मूल्यों को आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिल रहा है। सीमा पर आतंक में कमी से स्पष्ट है कि समाज की सकारात्मक सोच अपने अनुकूल परिस्थितियों के निर्माण हेतु सक्षम है। हमें याद रखना होगा—

शौर्य पराक्रम की गाथाएं भरी पड़ी है इतिहासों में
परम्परा के चिर-उन्नायक, जिएँ निरन्तर संघर्षों में
हृदयों में उस राष्ट्रप्रेम के, लेकर हम तूफान चलें
युग परिवर्तन की बेला में, हम सब मिलकर साथ चलें।

ए महिना के तिहार

ए महिना के पहिली तिहार मन म चार तारीक के भगवान जगन्नाथ के रथयात्रा हवय। तेकर बाद सोलह तारीक के असाढ़ी पुन्नी (गुरु पूजन) हवय। महिना के पहिली एकादसी (देवशयनी) बारह तारीक अऊ दूसर एकादसी (कामदा) अठ्ठाइस तारीक के परिही।

श्री जगन्नाथ रथयात्रा	**आषाढ़ शु. 02**	**04 जुलाई**
देवशयनी एकादशी	**आषाढ़ शु. 11**	**12 जुलाई**
श्री गुरु पूर्णिमा	**आषाढ़ शु. 15**	**16 जुलाई**
कामदा एकादशी	**श्रावण कृ. 11**	**28 जुलाई**

आघू पाछू के पन्ना म जेन पुरखा मन के फोटो छाप के सुरता करे हन, ओ मन के संगे संग पहिली तारीक के राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के पुण्यतिथि हवय। चार तारीक के स्वामी विवेकानंद, चौदह तारीक के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक प्रो. राजेन्द्र सिंह, बीस तारीक के बटुकेश्वर दत्त, सत्ताईस तारीक के डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, इकत्तीस तारीक के बड़का गवैय्या मोहम्मद रफी के पुण्यतिथि घलौ हवय अऊ सरदार उधमसिंह के बलिदान दिवस घलौ इकत्तीस तारीक के परिही।

आजकाल के दिवस मनाए के रद्दा म पहिली तारीक के डॉक्टर दिवस अऊ ग्यारा तारीक के विश्व जनसंख्या दिवस घलौ मनाए जाही।

अऊ कोनो तिहार छूटे होही तेला बताहा, त आघू सकेलबो।

जय जोहार – जय माँ भारती।

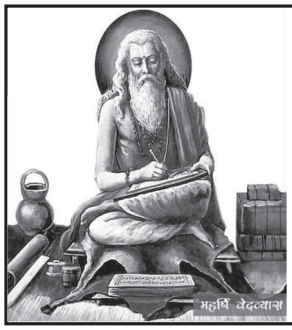

श्री गुरु पूजन दिवस
आषाढ़ पूर्णिमा
(16 जुलाई 2019)

उफनती नदी में बोट पलटी, मरीन कमांडो ने बचायी मां-बेटी की जान

कश्मीर में सुरक्षाबल आम लोगों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। गत बुधवार 19 जून 2019 को उत्तरी कश्मीर के बांदीपोरा में इंडियन नेवी मरीन कमांडो दो महिलाओं के लिए फिर लाइफ-सेवर साबित हुए। दरअसल, मां-बेटी वूलर नदी से होते हुए बोट से बांदीपोरा से सोपोर जा रही थी। बोट घर के सामान से लदी थी। अचानक उफनती नदी के बहाव में बोट पलट गयी। जिसमें मां रफिया बेगम और बेटी लाली दोनों नदी के बहाव में बहनें लगीं।

इसकी जानकारी घटनास्थल के नजदीक तैनात इंडियन नेवी के मरीन कमांडो और मार्कोज डाइवर्स को दी गयी। उन्होंने तुरंत कार्रवाई करते हुए दोनों महिलाओं को बचा लिया। अपनी जान जोखिम में डालकर दोनों की जान बचाने पर मां रफिया बेगम ने कमांडोज को ढेरों आशीर्वाद दिये, कमांडोज की त्वरित कार्रवाई की हर स्थानीय कश्मीरी प्रशंसा कर रहा है।

MARCOS इंडियन नेवी की स्पेशल फोर्स यूनिट है, जिसको कश्मीर में बाढ़ जैसी स्थितियों से निपटने के लिए तैनात किया गया है।

प्रेरक प्रसंग

सत्य का आचरण

राजा सत्यव्रत का नियम था कि, बाजार में लोग जो वस्तुएँ बेचने के लिए आते थे यदि उनमें से कुछ बच जायें तो सायंकाल उन्हें खरीद लेते थे। एक दिन एक लोहार लोहे की बनी शनि की मूर्ति लाया और उसने बाजार में आकर यह कहना प्रारंभ किया—''जो कोई इस मूर्ति को खरीदेगा, लक्ष्मी, धर्म, कर्म, यश और शक्ति उसे छोड़कर चले जायेंगे।'' यह सुनकर भला कौन उसकी मूर्ति की खरीदता ? नियम के अनुसार राजा ने उसे खरीद लिया।

आधी रात को राजा के कक्ष में चमक हुई और वहाँ एक सुन्दर स्त्री प्रकट हुई और वह कहने लगी—''अब तुम्हारे घर में शनि का वास हो गया है। मैं राज्यलक्ष्मी अब यहाँ वास नहीं कर सकती। मुझको विदा दीजिए।''

राज्यलक्ष्मी चली गयी। एक के बाद एक, धर्म, कर्म, यश और बल ने वहाँ से प्रस्थान किया। अब बारी थी सत्य की। जैसे ही वह जाने लगा, महाराज ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—''शेष भले ही चले जायें, मैं तुम्हें कभी नहीं जाने दूँगा। मैंने सत्य का व्रत धारण किया है और सत्य का आचरण किया है। आपके दर्शन के लिए तो मैंने शनि की मूर्ति ली है। सत्यदेव आप पधारिए और यहाँ रहिए।''

सत्यदेव से उत्तर देते न बना। अब जब सत्यदेव नहीं गये तो सब वापस लौट आये। ''सत्यमेव जयते नानृतम्''—सत्य की ही जीत होती है, न कि झूठ की।

संघ शिक्षा वर्ग - तृतीय वर्ष के समापन समारोह में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी के उद्‌बोधन के अंश

चुनाव के बाद, इस वर्ग का प्रारंभ हुआ और समापन हो रहा है। संयोग की बात है, पांच वर्ष पूर्व 2014 में भी ऐसा ही हुआ था और उस समय जो तिथिमान बना वर्ष का, उसमें संयोग ऐसा हुआ कि हिन्दू साम्राज्य दिवस की तिथि शिविर समापन के पहले दिन थी, और इस बार भी हिन्दू साम्राज्य दिवस की तिथि वर्ग समापन से एक दिन पहले है।

चुनाव में स्पर्द्धा होती ही है। प्रजातंत्र है, राजनीतिक दलों को चुनाव लड़ने ही पड़ते हैं। स्पर्द्धा होने के कारण कई प्रकार की बातें चलती हैं, चुनाव वातावरण में खलबली रहती है। थोड़ा विक्षोभ भी आ जाता है। कुछ को ही चुनकर आना है, बाकी को पराजित होना है, ये तो स्वाभाविक प्रक्रिया है।

पिछली बार जो राजनीतिक दल जीता था, वह इस बार अधिक शक्ति के साथ विजयी हुए हैं। समाज ने ऐसा दिखा दिया है, कि उनका काम शायद समाज को पसंद आया है। इसलिए एक ओर अवसर दिया। कुछ अपेक्षाएं पूरी हो गई, कुछ ओर हैं। समाज को लगा कि एक अवसर ओर देने से उन अपेक्षाओं को पूरा करेंगे। तो उनका संख्याबल बढ़ा। लेकिन उनके लिए समझने की भी एक बात है कि सारी अपेक्षाएं जल्दी पूरी हों, ये उनका अधिक दायित्व बन गया है।

देश की जनता अधिक सीख रही है, स्वार्थ और भेदों से ऊपर उठकर, व्यवहारिक सूझबूझ व दृढ़ता के साथ, देश की एकात्मता अंखंडता, देश का विकास व राजनीति में शासन-प्रशासन के क्रियाकलापों में पारदर्शिता के पक्ष में मतदान कर रही है। प्रचार के सब हथकंडे अपनाने के बाद, प्रचार से कोई ढकोसला उनके आगे खड़ा करे, कितनी भी मीठी बात करे तो भी अब कोई भरमा नहीं सकता, जनता को ठगा नहीं जा सकता, यह शुभ शगुन है। प्रत्येक चुनाव में हमारे देश की जनता अधिक सीख रही है। बड़ी सूझबूझ के साथ देश की एकता और एकात्मता को ध्यान में रखकर हर चुनाव में समझदारी दिखा रही है।

अब चुनाव समाप्त हो गए हैं, सभी को अब देश के लिए मिलकर ठीक काम करना है, चुनाव तो सिर्फ एक स्पर्धा है। जीत-हार हो गयी है जो होना था, वो हो गया। देश धर्म की रक्षा के हित मिलकर साथ चलें, ये केवल स्वयंसेवकों का विषय नहीं है, समस्त प्रजा के लिए हैं। जीत वाले जीत के गुमान में और हार वाले अपनी भड़ास निकालने के लिए अमर्यादित व्यवहार करेंगे तो उसमें देश का नुकसान है। आज क्या चल रहा है बंगाल में, चुनाव बाद ऐसा कहीं होता है, कहीं किसी और प्रांत में हो रहा है। नहीं होना चाहिए, और यदि किन्हीं गुंडा प्रवृत्ति वाले लोगों के कारण होता है तो शासन प्रशासन को आगे बढ़कर बंदोबस्त करना चाहिए, उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते।

सामान्य व्यक्ति नासमझ हो सकता है, मर्यादा तोड़कर व्यवहार कर सकता है। किन्तु शासन का कर्तव्य है कि देश की एकात्मता अखंडता के लिये, कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए दंड शक्ति से व्यवस्था बनाए। एक अनुभवी, संघर्ष का अनुभव रखने वाला व्यक्ति यदि

(शेष पृष्ठ १४ पर)

राष्ट्र के प्रति समर्पण सिखाने वाली पाठशाला है संघ की शाखा - स्वान्त रंजन

उदयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वान्त रंजन जी ने कहा कि संघ की शाखा केवल खेल खेलने का स्थान नहीं है। संघ के तृतीय सरसंघचालक बाला साहब देवरस ने कहा था कि संघ की शाखा सज्जनों की सुरक्षा का बिन बोले अभिवचन है, तरुणों को व्यसन मुक्त रखने वाला संस्कार पीठ है, आपत्ति-विपत्ति में त्वरित निरपेक्ष सहायता का आशा केन्द्र है, महिला सुरक्षा और सभ्य आचरण का आश्वासन है, दुष्ट ताकतों पर धाक जमाने की शक्ति है और सामाजिक - राष्ट्रीय कार्यों के लिए कार्यकर्ता प्रदान करने का विद्यापीठ है।

स्वान्त रंजन जी शनिवार को विद्या निकेतन सेक्टर-4 में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग द्वितीय वर्ष के समापन समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संघ का प्रशिक्षण शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक तीनों स्तर पर होता है और स्वयंसेवक समाज के प्रति समर्पण का भाव मन में धारण करता है। स्वयंसेवक के मन में हर समय देश के प्रति समर्पण का भाव समाज को मजबूत करना है।

शांतिकाल में भी समाज का राष्ट्र के प्रति जाग्रत और सजग रहना जरूरी है। उन्होंने देश में सामाजिक तौर पर ऊंच-नीच के भाव से होने वाली घटनाओं पर कहा कि न तो यह भारतीय संस्कृति रही है, न ही कोई संत इसका समर्थन करते हैं। उन्होंने बाबासाहेब आम्बेडकर के समता-स्वतंत्रता-बंधुता के संदेश का उदाहरण बताते हुए कहा कि, यह उन्होंने भगवान बुद्ध से प्राप्त किया और आज भी प्रासंगिक है। यही भावना समाज में रहनी चाहिए। समाज को जाति, भाषा, प्रांत से ऊपर उठना होगा।

स्वान्त रंजन जी ने कहा कि समाज अब जागरूकता प्रकट भी करने लगा है। चुनावों में जनता ने क्षेत्रीय दलों के बजाय राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को सामने रखकर निर्णय करने में परिपक्वता दर्शायी।

उन्होंने कहा कि अपने संस्कारों, अपने आचार, अपने व्यवहार से भारत पूरे विश्व में अग्रणी हो रहा है। भारत को विश्व गुरु बनाना है, यह बड़ा कार्य है और इस लक्ष्य को हम जरूर पूरा करेंगे। उन्होंने गुरु नानक देव के 550वें प्रकाश वर्ष, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के 100वें वर्ष और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज की स्थापना के 75वें वर्ष को याद करते हुए कहा कि हम सभी इनसे प्रेरणा लें और राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि रखें।

समारोह के मुख्य अतिथि कांकरोली द्वारिकाधीश पीठ के युवराज गोस्वामी डॉ. वागीश कुमार ने राष्ट्रनीति को हरेक नीति से आगे बताते हुए कहा कि व्यक्ति इतना व्यस्त हो गया है कि वह धर्म और राष्ट्र को भूलता जा रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा किए जा रहे कार्यों को राष्ट्र के प्रति समर्पित बताते हुए कहा कि संघ और संघ की विचारधारा की बदौलत ही योग को दुनिया ने मान्यता दी और विश्व ने योग दिवस मनाना शुरू किया। आज जहां भारत की बात होती है, वहां संघ की बात भी होती है। उन्होंने सभी से संघ को तन-मन-धन से योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि, संघ के समर्पित कार्यकर्ताओं की बदौलत ही भारत विश्व गुरु के पद पर स्थापित होगा।

संघ शिक्षा वर्ग द्वितीय वर्ष बिलासपुर का समापन समारोह

राष्ट्र पुनर्निर्माण के कार्य में समाज के प्रत्येक वर्ग को सहयोग करना चाहिए : माधव विद्वान्स

बिलासपुर। संघ शिक्षा वर्ग का समापन समारोह, गुरुवार 13 जून 2019 को वर्षा के कारण बनी विपरित परिस्थितियों के बाद भी निर्धारित समय पर सायंकाल 5.45 बजे प्रारंभ हुआ। मंच पर अतिथि आगमन पर स्वागत प्रणाम हुआ, तत्पश्चात ध्वजारोहण, ध्वजप्रणाम और प्रार्थना हुई। समारोह में प्रदक्षिणा संचलन के पश्चात् शिक्षार्थियों द्वारा शारीरिक प्रात्यक्षिक-गण समता, पदविन्यास, दण्ड संचालन, नि:युद्ध, सूर्यनमस्कार, योगासन, घोष, सामूहिक समता, सामूहिक व्यायामयोग आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शारीरिक प्रदर्शन के पश्चात् सामूहिक गीत—

''युग परिवर्तन की बेला में, हम सब मिलकर साथ चलें।
देश धर्म की रक्षा के हित, सहते सब आघात चलें।
मिलकर साथ चलें, मिलकर साथ चलें॥''

मंच पर आसीन अतिथियों का स्वागत एवं परिचय वर्ग कार्यवाह नवलसिंह भदौरिया ने किया। मंच पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध व्यवसायी एवं समाजसेवी श्री सुधीर कुमार गुप्ता, मुख्य वक्ता माधव विद्वान्स (मध्यक्षेत्र कार्यवाह), वर्ग के सर्वाधिकारी डॉ. विनोद तिवारी (अस्थिरोग विशेषज्ञ) और बिलासपुर के विभाग संघचालक काशीनाथ गोरे थे। वर्ग का प्रतिवेदन वर्ग कार्यवाह द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा आभार प्रदर्शन वर्ग के व्यवस्था प्रमुख गणपति रायल ने किया।

इस समापन समारोह के मुख्य अतिथि सुधीर कुमार गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि, ईश्वर ने हमें यह जीवन उपहार स्वरूप दिया है। प्रशिक्षण के दौरान जो भी आपको बताया गया, वह अपने जीवन में ग्रहण करने से वह उपहार बन जायेगा। प्रशिक्षण का कार्य पत्थर को तराशने जैसा होता है। चांदी की अच्छी सफाई तब होती है, जब उसमें अपना स्वयं का प्रतिबिंब दिखाई देता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि, शिक्षार्थी यहां से जो प्रशिक्षण लेकर जाएंगे वे समाजोपयोगी कार्य में जुटेंगे।

समापन समारोह के मुख्य वक्ता माधव विद्वान्स ने अपने उद्बोधन में कहा कि, इस प्रकार के संघ के प्रशिक्षण वर्ग सम्पूर्ण देशभर चलते हैं। इन प्रशिक्षणों से ''सादा जीवन उच्च विचार'' को स्वयंसेवक आत्मसात करते हैं। स्वयं के कार्य को स्वयं करने का अभ्यास करते हैं। प्रतिदिन एक घंटा देने वाला स्वयंसेवक ऐसे प्रशिक्षण वर्ग से संघ कार्य के लिए सारा जीवन देने के लिए तत्पर हो जाता है। ऐसे प्रशिक्षण वर्गों में सामान्य स्वयंसेवक भी राष्ट्रसेवा के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर कर मातृभूमि की सेवा में जुट जाता है।

नागपुर में एक शाखा से प्रारंभ हुआ संघ का कार्य आज देशभर में फैल चुका है। समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संघ के विविध संगठन, जो स्वायत्त और स्वतंत्र है, वे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को साथ लेकर समाज हित में और राष्ट्र कार्य में जुटे हुए हैं। इन कार्यों से करोड़ो लोग प्रेरित हो रहे हैं। जैसे मजदूरों के क्षेत्र में मजदूर संघ, किसानों के क्षेत्र में किसान संघ, शिक्षा के क्षेत्र में विद्या भारती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर, संस्कार केन्द्र, पूर्व सैनिक परिषद, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान भारती, सेवा के क्षेत्र में सेवा भारती, वनवासियों

(शेष पृष्ठ १० पर)

गुरुपूर्णिमा और संघ : भगवा ध्वज है गुरु हमारा

— मा. भागैय्या, सह सरकार्यवाह, रा.स्व. संघ

अपने राष्ट्र और समाज जीवन में गुरुपूर्णिमा- आषाढ़ पूर्णिमा अत्यंत महत्त्वपूर्ण उत्सव है। व्यास महर्षि आदिगुरु हैं। उन्होंने मानव जीवन को गुणों पर निर्धारित करते हुए उन महान आदर्शों को व्यवस्थित रूप में समाज के सामने रखा। विचार तथा आचार का समन्वय करते हुए, भारतवर्ष के साथ उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति का मार्गदर्शन किया। इसलिए भगवान वेदव्यास जगत् गुरु हैं। इसीलिए कहा है, 'व्यासो नारायणम् स्वयं'। इस दृष्टि से गुरुपूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा गया है।

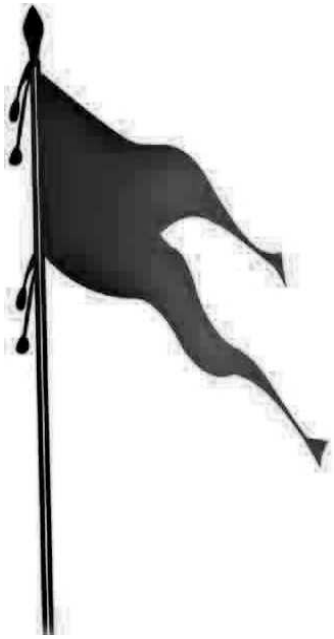

गुरु की कल्पना :

अखंड मंडलाकारं व्याप्तं येन् चराचरं,

तत्पदं दर्शितंयेन् तस्मै श्री गुरवे नमः

यह सृष्टि अखंड मंडलाकार है। बिन्दु से लेकर सिंधु तक सारी सृष्टि को चलाने वाली अनंत शक्ति का, जो परमेश्वर तत्त्व है, वहां तक सहज सम्बन्ध है यानी वह जो मनुष्य से लेकर समाज, प्रकृति और परमेश्वर शक्ति के बीच में जो सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को जिनके चरणों में बैठकर समझने की अनुभूति पाने का प्रयास करते हैं, वही गुरु है। संपूर्ण सृष्टि चैतन्ययुक्त है। चर, अचर में एक ही ईश्वर तत्त्व है। इनको समझकर, सृष्टि के सन्तुलन की रक्षा करते हुए, सृष्टि के साथ समन्वय करते हुए जीना ही मानव का कर्तव्य है। सृष्टि को जीतने की भावना विकृति है, सहजीवन ही संस्कृति है। सृष्टि का परम सत्य-सारी सृष्टि परस्पर पूरक है। सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है। देना ही संस्कार है, त्याग ही भारतीय संस्कृति है। त्याग, समर्पण, समन्वय-यही हिन्दू संस्कृति है, मानव जीवन में, सृष्टि में शांतियुक्त, सुखमय, आनन्दमय जीवन का आधार है।

नित्य अनुभव : वृक्ष निरन्तर कार्बनडाई ऑक्साइड को लेते हुए ऑक्सीजन बाहर छोड़ते हुए सूर्य की सहायता से अपना आहार तैयार कर लेते हैं। उनके ऑक्सीजन यानी प्राणवायु छोड़ने के कारण मानव जी सकता है। मानव का जीवन वृक्षों पर आधारित है अन्यथा सृष्टि नष्ट हो जाएगी। आजकल वातावरण प्रदूषण से विश्व चिंतित है, मानव जीवन खतरे में है। इसलिए सृष्टि के संरक्षण के लिए मानव को योग्य मानव, मानवतायुक्त मानव बनना है, तो गुरुपूजा महत्त्वपूर्ण है। सृष्टि में सभी जीवराशि, प्रकृति अपना व्यवहार ठीक रखते हैं, मानव में विशेष बुद्धि होने के कारण, बुद्धि में विकृति होने से प्रकृति का संतुलन बिगाड़ने का काम भी मानव ही करता है। बुद्धि के अहंकार के कारण मानव ही गड़बड़ करता है। इसलिए 'गुरुपूजा' के द्वारा मानव जीवन में त्याग, समर्पण भाव निर्माण होता है।

गुरु व्यक्ति नहीं, तत्त्व है : अपने समाज में हजारों सालों से, व्यास भगवान से लेकर आज तक, श्रेष्ठ गुरु परम्परा चलती आयी है। व्यक्तिगत रीति से करोड़ों लोग अपने-अपने गुरु को चुनते हैं, श्रद्धा से, भक्ति से वंदना करते हैं, अनेक अच्छे संस्कारों को पाते हैं। इसी कारण आक्रमणों के बाद भी अपना समाज, देश, राष्ट्र आज भी जीवित है। विश्व के अन्दर समाज जीवन में एकात्मता की, एक रस जीवन की कमी है। राष्ट्रीय भावना की कमी, त्याग भावना की कमी के कारण भ्रष्टाचार, विषमय, संकुचित भावनाओं से, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, शोक रहित (चारित्र्य दोष) आदि दिखते हैं। इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने गुरु स्थान पर भगवाध्वज को स्थापित किया है।

भगवाध्वज त्याग, समर्पण का प्रतीक है। स्वयं जलते हुए सारे विश्व को प्रकाश देने वाले सूर्य के रंग का प्रतीक है। संपूर्ण जीवों के शाश्वत सुख के लिए समर्पण करने वाले साधु संत भगवा वस्त्र ही पहनते हैं, इसलिए भगवा, केसरिया त्याग का प्रतीक है। अपने राष्ट्र जीवन

के, मानव जीवन के इतिहास का साक्षी यह ध्वज है। यह शाश्वत है, अनंत है, चिरंतन है।

व्यक्ति पूजा नहीं, तत्त्व पूजा : संघ तत्त्व पूजा करता है, व्यक्ति पूजा नहीं। व्यक्ति शाश्वत नहीं समाज शाश्वत है। व्यक्ति महान है। अपने समाज में अनेक विभूतियां हुई हैं, आज भी अनेक विद्यमान हैं। उन सारी महान विभूतियों के चरणों में शत्-शत् प्रणाम, परन्तु अपने राष्ट्रीय समाज को, संपूर्ण समाज को, संपूर्ण हिन्दू समाज को राष्ट्रीयता के आधार पर, मातृभूमि के आधार पर संगठित करने का कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा है। इस नाते किसी व्यक्ति को गुरुस्थान पर न रखते हुए भगवाध्वज को ही हमने गुरु माना है।

तत्त्व पूजा - तेज, ज्ञान, त्याग का प्रतीक : हमारे समाज की सांस्कृतिक जीवनधारा में 'यज्ञ' का बड़ा महत्त्व रहा है। 'यज्ञ' शब्द के अनेक अर्थ है। व्यक्तिगत जीवन को समर्पित करते हुए समष्टिजीवन को परिपुष्ट करने के प्रयास को यज्ञ कहा गया है। सद्गुण रूप अग्नि में अयोग्य, अनिष्ट, अहितकर बातों को होम करना यज्ञ है। श्रद्धामय, त्यागमय, सेवामय, तपस्यामय जीवन व्यतीत करना भी यज्ञ है। यज्ञ का अधिष्ठाता देव यज्ञ है। अग्नि की प्रतीक है ज्वाला, और ज्वालाओं का प्रतिरूप है — अपना परम पवित्र भगवाध्वज।

हम श्रद्धा के उपासक हैं, अन्धविश्वास के नहीं। हम ज्ञान के उपासक हैं, अज्ञान के नहीं। जीवन के हर क्षेत्र में विशुद्ध रूप में ज्ञान की प्रतिष्ठापना करना ही हमारी संस्कृति की विशेषता रही है।

सच्ची पूजा - 'तेल जले, बाती जले-लोग कहें दीप जले' : जब दीप जलता है हम कहते हैं या देखते हैं कि दीप जल रहा है, लेकिन सही अर्थ में तेल जलता है, बाती जलती है, वे अपने आपको समर्पित करते हैं तेल के लिए। इसी तरह व्यक्ति के लिए कोई नाम नहीं, प्रचार नहीं, परन्तु दोनों के जलने के कारण ही 'प्रकाश' मिलता है — यह है समर्पण।

कारगिल युद्ध में मेजर पद्मपाणी आचार्य, गनर रविप्रसाद जैसे असंख्य वीर पुत्रों ने भारत माता के लिए अपने आपको समर्पित किया। मंगलयान में अनेक वैज्ञानिकों ने अपने व्यक्तित्व, पारिवारिक सुख की तिलाञ्जलि देकर अपनी सारी शक्ति समर्पित की।

प्राचीन काल में महर्षि दधीचि ने समाज कल्याण के लिए, संरक्षण के लिए अपने जीवन को ही समर्पित कर दिया था। समर्पण अपने राष्ट्र की, समाज की परंपरा है। समर्पण भगवान की आराधना है। गर्भवती माता अपनी संतान के सुख के लिए अनेक नियमों का पालन करती है, अपने परिवार में माता, पिता, परिवार के विकास के लिए अपने जीवन को समर्पित करती है। खेती करने वाले किसान और श्रमिक के समर्पण के कारण ही सबको अन्न मिलता है। करोड़ों श्रमिकों के समर्पण के कारण ही सड़क मार्ग, रेल मार्ग तैयार होते हैं। शिक्षक-आचार्यों के समर्पण के कारण ही करोड़ों लोगों का ज्ञानवर्धन होता है। डॉक्टरों के समर्पण सेवा के कारण ही रोगियों को चिकित्सा मिलती है। पैसा केवल जीने के लिये लिया जाता था। इस नाते सभी काम अपने समाज में आराधना भावना से, समर्पण भावना से होते थे। परन्तु आज आचरण में ह्रास दिखता है।

राष्ट्राय स्वाहा - इदं न मम्

इसलिए प. पू. डॉ. हेडगेवार जी ने फिर से संपूर्ण समाज में, प्रत्येक व्यक्ति में समर्पण भाव जगाने के लिए, गुरुपूजा की, भगवाध्वज की पूजा की परंपरा प्रारंभ की।

व्यक्ति के पास प्रयासपूर्वक लगाई गई शारीरिक शक्ति, बुद्धिशक्ति, धनशक्ति होती है, पर उसका मालिक व्यक्ति नहीं, समाज रुपी परमेश्वर है। अपने लिए जितना आवश्यक है उतना ही लेना। अपने परिवार के लिए उपयोग करते हुए शेष पूरी शक्ति-धन, समय, ज्ञान-समाज के लिए समर्पित करना ही सच्ची पूजा है। मुझे जो भी मिलता है, वह समाज से मिलता है। सब कुछ समाज का है, परमेश्वर का है, जैसे- सूर्य को अर्ध्य देते समय नदी से पानी लेकर फिर से नदी में डालते हैं। मैं, मेरा के अहंकार भाव के लिए कोई स्थान नहीं। परन्तु आज चारों ओर व्यक्ति के अहंकार को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसलिए सारी राक्षसी प्रवृत्तियां- अहंकार, ईर्ष्या, पदलोलुपता, स्वार्थ बढ़ गया है। इन सब आसुरी प्रवृत्तियों को नष्ट करते हुए त्याग, तपस्या, प्रेम, निरहंकार से युक्त गुणों को अपने जीवन में लाने की साधना ही गुरु पूजा है।

आर्ट ऑफ लिविंग की प्रेरणा से नदी को पुनर्जीवित करने में जुटी 20 हजार महिलाएं

तमिलनाडु के वेल्लोर जिले की महिलाओं ने सालों से सूखी पड़ी एक नदी को फिर से जिंदा करने का कार्य शुरु किया है। और संभावना है कि हजारों महिलाओं का प्रयास सफल होगा। देश के कई क्षेत्रों में पानी की भारी कमी है, जिसकी आपूर्ति के लिए ज्यादातर लोग और सरकार बारिश के भरोसे हैं। इस सबके बीच तमिलनाडु के वेल्लोर जिले की 20,000 महिलाओं ने सालों से सूखी पड़ी एक नदी को फिर से जिंदा करने का प्रयास शुरू किया।

टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित समाचार के अनुसार वेल्लोर तमिलनाडु के 24 सूखाग्रस्त जिलों में से एक है। यहां नागानदी नाम की एक नदी कुछ दशक पहले पानी का मुख्य स्त्रोत हुआ करती थी। लेकिन करीब 15 साल पहले यह खत्म हो गई। पानी कम होते चले जाने के चलते यहां के कृषि मजदूर काम की तलाश में शहरों में चले गए। इनमें अधिकतर पुरुष थे।

आर्ट ऑफ लिविंग (एओएल) फाउंडेशन के कुछ लोग जिले में पहुंचे और नदी को पुनर्जीवित करने का सुझाव दिया। क्योंकि कर्नाटक में इस तरह की परियोजनाओं से सूख चुकी दो नदियों को फिर से जिंदा किया जा चुका है, इसलिए वेल्लोर की नागानदी को फिर से बहाने के लिए सरकार की मंजूरी आसानी से मिल गई। इसके बाद एक टीम गठित की गई और सैटेलाइट के माध्यम से नदी को मापा गया। फिर वेल्लोर क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए कार्य योजना तैयार की गई। इसके तहत महिलाओं को परियोजना का हिस्सा बनाया गया और उन्हें मनरेगा के तहत मजदूरी देना सुनिश्चित किया गया।

इन महिलाओं को यह काम अंजाम देने में चार साल लगे हैं। इस दौरान उन्होंने बारिश का पानी रोकने के लिए 3500 छोटे-छोटे बांध और कुंए बनाए। इनमें इकट्ठा पानी का इस्तेमाल नदी को जिंदा करने में किया गया। इन बांधों और कुंओं से आज यहां कई क्षेत्रों में पानी की जरूरत पूरी हो रही है। गांव की महिलाएं बताती हैं कि अब जिले के कुछ इलाकों में फिर से खेती भी होने लगी है। कई क्षेत्रों और गावों में लोगों को पीने और सिंचाई के लिए पानी मिल रहा है।

नागानदी पुनर्जीवन परियोजना के निदेशक चंद्रशेखरन कुप्पन ने बताया कि, 'नदी की सतह पर पानी भूजल की पूर्ति के बाद ही बहता है। इसलिए नदी को फिर से जिंदा करने का मतलब केवल उसके बहाव से नहीं जुड़ा है, बल्कि इसमें जमीन के अंदर तक पर्याप्त मात्रा में पानी पहुंचाना है। दूसरे शब्दों में कहें तो वर्षा जल को मिट्टी के जरिये नीचे तक पहुंचने देना है। इस साल बारिश के बाद नदी तेजी से बह रही होगी।'

उधर, वेल्लोर से सैकड़ों मील दूर उत्तराखंड में भी कई ग्रामीण पानी इकट्ठा करने की तकनीकें इस्तेमाल कर रहे हैं। यहां गढ़वाल में बच्चों द्वारा शुरू किए गए प्रयास के तहत अलग-अलग आकार के जलाशय निर्मित किए जा रहे हैं। वहीं, मॉनसून का पानी इकट्ठा करने के लिए लोग लिखित प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर कर रहे हैं। ये दोनों मामले उदाहरण पेश करते हैं कि कैसे जल संकट से जूझ रहे भारत को स्थानीय स्तर पर जल स्त्रोतों का संरक्षण करने की जरूरत है।

श्रीराम जन्मभूमि पर हमले के दोषी आतंकियों को आजीवन कारावास

अयोध्या में विवादित ढांचा गिराए जाने के विरोध में आतंकियों ने योजना बनाई थी कि, श्री राम जन्मभूमि पर बम विस्फोट करके मंदिर को क्षति पहुंचाई जाएगी और घटना के बाद पूरे हिन्दुस्थान में कानून एवं व्यवस्था बिगड़ जाएगी। घटना को अंजाम देकर देश को एक बड़े दंगे की आग में झोंकने की साजिश कई वर्षों से रची जा रही थी। इस साजिश को मूर्त रूप देने के लिए 05 जुलाई वर्ष 2005 को 6 आतंकी मार्शल जीप से अयोध्या पहुंचे तथा विस्फोट करके जीप को उड़ा दिया। इस विस्फोट में एक फिदायीन वहीं पर मारा गया था। घटना के 14 साल बाद अब इनमें से चार को आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी है।

धार्मिक भावनाओं को आहत करने के लिए वाहन में विस्फोट करने के बाद आतंकी मंदिर परिसर की तरफ बढ़ने लगे थे। विस्फोट की आवाज सुनते ही सी.आर.पी.एफ. और पी.ए.सी. के जवानों ने तत्परता से उन पांचों आतंकियों को ढूंढ निकाला। आमने-सामने की मुठभेड़ हुई, जिसमें पांच आतंकी और तीन आम नागरिक मारे गए। मारे गए आतंकियों के कब्जे से राइफल, चीन की बनी हुई पिस्टल, ग्रेनेड, राकेट लाँचर एवं नोकिया मोबाइल बरामद हुआ था। नोकिया फोन को सर्विलांस पर लगाया गया। संदिग्ध लोगों से पूछताछ की गई। इस मामले में षड्यंत्र रचने वाले पांच और आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया।

अयोध्या जनपद के थाना राम जन्मभूमि में 11वीं वाहिनी पी.ए.सी. के दल नायक, कृष्ण चन्द्र सिंह ने घटना की एफ.आई.आर. दर्ज कराई थी। एफ.आई.आर. के अनुसार ''करीब सवा नौ बजे सफेद मार्शल जिसका नंबर UP-42 T-0618 था। राम मंदिर के थोड़ा पहले जहां जैन मंदिर स्थित है। वहां पर आकर रुकी। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता जोरदार धमाका हुआ। जीप के परखचे उड़ गए। बैरीकेडिंग भी तितर-बितर हो चुकी थी। इस हमले में एक फिदायीन मर चुका था।''

फैजाबाद जनपद न्यायालय में अभियोजन पक्ष ने आरोप पत्र दायर किया। 8 दिसंबर 2006 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इस मुकदमे को इलाहाबाद जनपद न्यायालय में भेजने का आदेश दिया। इसके बाद इन पांचों आतंकियों को प्रयागराज के नैनी सेंट्रल जेल में लाया गया। मुकदमे की पूरी सुनवाई नैनी सेन्ट्रल जेल के अन्दर बनी विशेष अदालत में की गयी। इलाहाबाद जनपद न्यायालय के अपर जिला जज एवं अधिवक्तागण जेल के अन्दर जा कर सुनवाई करते थे। फैसला भी जेल के अन्दर बनी विशेष अदालत में सुनाया गया।

कोर्ट ने अपने फैसले में आसिफ उर्फ इकबाल को मुख्य साजिशकर्ता माना। दूसरे आतंकी, डॉ. इरफान पर यह दोष सिद्ध हुआ कि उसने हमला करने आए पांचों आंतकियों को अपने यहां शरण दी थी। तीसरे आतंकी, मोहम्मद नसीम ने सिम कार्ड और ए.के-47 खरीदी थी। चौथे आतंकी शकील ने वाहन मुहैया कराया था, जिसमें गोला बारूद ले जाया गया था। ट्रायल कोर्ट ने साक्ष्य के अभाव में मो. अजीज को बरी कर दिया। अजीज पर आरोप था कि लश्कर-ए-तैयबा का आतंकी इनके घर पर आता था।

मो. अजीज के बरी होने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ''सरकार इस मामले का विधिक परीक्षण कराएगी और ऊपर की अदालत में इस फै सले के खिलाफ अपील करेगी। इसके साथ ही इस मुकदमें की पैरवी पर सरकार नजर बनाए रखेगी।''

सरकार व मुख्य न्यायाधीश से अपील, शीघ्र प्रारम्भ हो राम मंदिर का निर्माण

हरिद्वार। विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल की बैठक के दूसरे व अंतिम दिन श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राममंदिर के निर्माण का मामला प्रमुख रहा। आध्यात्मिक नगरी हरिद्वार पधारे पूज्य संतों का कहना था कि मंदिर को भव्यता देने का कार्य शीघ्रातिशीघ्र प्रारंभ हो। इस सम्बन्ध में आयोजित प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए पूज्य जगद्गुरु द्वाराचार्य श्री श्यामदेवाचार्य जी महाराज, नृसिंह पीठ, जबलपुर ने कहा कि हिन्दू समाज का सन् 1528 ई। से ही इस सम्बन्ध में दृढ़ संकल्प रहा है तथा पूज्य संतों के मार्गदर्शन में 1984 से विश्व हिन्दू परिषद् सम्पूर्ण हिन्दू समाज के साथ इसके लिए संघर्षरत है। अब इस पुनीत राष्ट्रीय कार्य में किसी भी प्रकार का विलम्ब उचित नहीं है।

विहिप कार्याध्यक्ष एडवोकेट आलोक कुमार तथा उपाध्यक्ष चम्पत राय के साथ आयोजित प्रेसवार्ता में उन्होंने याद दिलाया कि, भारतीय जनता पार्टी ने 1989 में अपनी पालमपुर की बैठक में प्रस्ताव पारित किया, आडवाणी जी ने रथ यात्रा निकाली तथा 1990 की कारसेवा में अटल जी ने गिरफ्तारी भी दी थी। 2019 के संकल्प पत्र में इस विषय को सम्मिलित करके प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस संकल्प को दोहराने से जनता में सरकार से अपेक्षाएं बढ़ी हैं। सम्पूर्ण विश्व ने यह देखा है कि, सभी राम विरोधियों ने मिलकर किस प्रकार न्यायिक प्रक्रिया को भी बाधित करने का कुचक्र रचा।

युगपुरुष पूज्य परमानंद जी महाराज की अध्यक्षता में पूज्य आचार्य अविचल दास जी महाराज द्वारा आज के सत्र में पारित एक प्रस्ताव में कहा गया है कि, ''देश का संत समाज सरकार से आह्वान करता है कि भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण में आने वाली समस्त बाधाओं को अतिशीघ्र दूर करे, जिससे करोड़ों राम भक्तों की आशाओं के अनुरूप श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राममंदिर का निर्माण हो और 'श्रीराम जन्मभूमि न्यास' ही मन्दिर का निर्माण करेगा।''

प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि, ''न्यायपालिका का भी अपनी जिम्मेवारी से मुँह मोड़ना ठीक नहीं रहेगा''। 1950 में पहला मुकदमा दर्ज करने के 60 वर्ष पश्चात 2010 में एक निर्णय मिला था; परन्तु इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ बेंच की न्यायिक विसंगति के कारण हिन्दू समाज को पूर्ण न्याय नहीं मिल पाया। राष्ट्रीय महत्व का यह विषय 2011 से सर्वोच्च न्यायालय में न सिर्फ लंबित है, बल्कि दुर्भाग्य से अभी भी उसकी प्राथमिकता में नहीं है तथा राम विरोधी न्यायिक प्रक्रिया को बाधित करने में जी जान से लगे हैं। अविश्वास का यह वातावरण किसी भी तरह उचित नहीं है।

मार्गदर्शक मण्डल प्रस्ताव के माध्यम से भारत के मुख्य न्यायाधीश का भी आह्वान करते हुए कहा कि, ''वे इस मामले में शीघ्रातिशीघ्र सुनवाई पूरी करें, जिससे श्रीरामजन्मभूमि के इस मामले का अतिशीघ्र निर्णय हो सके''।

(पृष्ठ ५ का शेष)

के हितों की रक्षा करने हेतु वनवासी कल्याण आश्रम आदि 40 से अधिक संगठन समाज हित में कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने अपने उद्बोधन में देश की परिस्थितियों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि, जैसे शरीर के सारे अंग एकजुट रहते हैं तो शरीर स्वस्थ रहता है, वैसे ही राष्ट्र के पुनर्निर्माण में सभी को आपसी भेद भुलाकर एकजुट रहना आवश्यक है। संघ-स्थापना के कालावधि में हिन्दू अपनी पहचान को भूल गया था। आज हिन्दू स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है। उन्होंने सभी को आह्वान किया कि, धर्म के मार्ग पर चलकर राष्ट्र पुनर्निर्माण के कार्य में समाज के प्रत्येक वर्ग को सहयोग करना चाहिए।

राजनीति से परे कुछ सवाल उठाती डॉक्टरों की हड़ताल

— डॉ. नीलम महेंद्र

पश्चिम बंगाल में डॉक्टरों पर हुए हमले के विरोध में लगभग एक हफ्ते से न सिर्फ पश्चिम बंगाल में स्वास्थ्य सेवाएं चरमराई हुई हैं बल्कि देश भर में डॉक्टरों के विरोध प्रदर्शन भी जारी हैं। राजधानी दिल्ली में ही इस हड़ताल के चलते मरीजों को होने वाली परेशानी का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता कि राजधानी के छः बड़े अस्पतालों में लगभग 40000 मरीजों को इलाज नहीं मिल सका और एक हजार से अधिक ऑपरेशन टाल दिए गए। हड़ताल के कारण उपचार नहीं मिलने से पश्चिम बंगाल में अब तक छः लोगों और एक नवजात शिशु की मौत हो चुकी है।

इन परिस्थितियों में सवाल यह उठता है कि डॉक्टरों की यह हड़ताल कितनी जायज है। यह बात सही है कि पश्चिम बंगाल में डॉक्टरों के साथ हुई घटना दुखद ही नहीं दुर्भाग्यपूर्ण भी है जिसका विरोध हर हाल में किया ही जाना चाहिए लेकिन जिनका मूलभूत कर्तव्य लोगों की जान बचाना हो उन्हें इतना तो सुनिश्चित करना ही चाहिए कि उनकी वजह से किसी की जान पर न बन आए। विरोध करने और अपने हक के लिए लड़ने के और भी तरीके हो सकते हैं जैसे काली पट्टी बांध कर आना या फिर कोई अन्य तरीका लेकिन उन्हें इतना तो सुनिश्चित करना ही चाहिए कि उनके कारण देश में अराजकता का माहौल पैदा ना हो क्योंकि उनका चिकित्सक धर्म उन्हें इस बात की अनुमति नहीं देता। उन्हें यह समझना चाहिए कि जिस दिन उन्होंने एक चिकित्सक बनने की सोची थी उन्होंने मानव समाज की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली थी और इसीलिए उन्हें भगवान का दर्जा दिया जाता है। शायद इसीलिए स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन ने भी डॉक्टरों से कहा है कि सरकार उनकी सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है लेकिन वे केवल प्रतीकात्मक विरोध करें और अपने कर्तव्यों का पालन करें। लेकिन इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के आह्वान पर 17 जून को देश व्यापी हड़ताल हुई।

ऐसे में एक मुख्यमंत्री के रूप में निश्चित ही यह ममता बनर्जी की भी विफलता है कि ना सिर्फ वे डॉक्टरों का भरोसा जीतने में नाकाम रहीं बल्कि उनके अड़ियल व्यवहार ने डॉक्टरों के आक्रोश को एक देश व्यापी आंदोलन बना दिया। स्थिति केवल बंगाल ही नहीं बल्कि देश भर में दिन ब दिन बिगड़ती ही जा रही है। दरअसल यह शायद देश में पहली बार हुआ है कि एक राज्य के डॉक्टरों की हड़ताल को देश भर के डॉक्टरों का समर्थन मिला हो। शायद इसीलिए एक राज्य से देश में फैलती स्वास्थ्य सेवाओं की बिगड़ती परिस्थितियों पर गृह मंत्रालय ने भी रिपोर्ट मांगी है कि इस हड़ताल को खत्म करने के लिए राज्य सरकार ने क्या कदम उठाए हैं। हालांकि ममता सरकार अपनी चिर परिचित शैली में इस बार भी अपने राज्य की इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को सांप्रदायिक रंग देकर लोगों को भड़काने के लिए भाजपा को ही जिम्मेदार ठहरा रही है लेकिन जिस प्रकार से बंगाल की यह आग देश भर में फै लती जा रही है, वो भी जानती हैं कि परिस्थितियाँ उनके हाथ से निकलती जा रही हैं। यही कारण है कि जो ममता दो दिन पहले तक डॉक्टरों पर कठोर कार्यवाही करने की धमकी दे रही थीं आज डॉक्टरों से यह आश्वासन देते हुए काम पर लौटने की अपील कर रही हैं कि किसी डॉक्टर पर कोई कार्यवाही नहीं कि जाएगी।

लेकिन राजनीति से परे जब हम इस घटना को समझने की कोशिश करते हैं तो पाते हैं कि यह स्थिति किसी भी समाज के लिए बेहद चिंताजनक है। एक अस्पताल में एक वृद्ध को उसके परिजन इलाज के लिए लेकर आते हैं। दुर्भाग्यवश डॉक्टर तमाम कोशिशों के बावजूद उसे बचा नहीं पाते। लेकिन परिजन डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाते हैं और विवाद हिंसा का वो रूप लेता है कि दो डॉक्टर घायल हो जाते हैं, इनमें से एक की तो जान पर बन आती है और उसे आई.सी.यू. में भर्ती कराना पड़ता है। परंतु खेद का विषय यह है कि यह देश की कोई पहली घटना नहीं थी, इस प्रकार की घटनाएं पूरे देश में आए दिन होती रहती हैं। किन्तु ऐसा भी नहीं है कि हर बार केवल डॉक्टर ही हिंसा का शिकार होते हैं। अभी कुछ समय पहले राजस्थान के एक अस्पताल का एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें जूनियर डॉक्टर मरीज के साथ मारपीट कर रहे थे। मध्यप्रदेश के गाँधी मेडिकल कॉलेज से भी हाल ही में इसी प्रकार की घटना सामने आई थी। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि जब इस तरह की घटनाओं की जांच कॉलेज की ही कमेटी द्वारा की गई तो उसकी रिपोर्ट अत्यंत चौंकाने वाली थी। जांच में यह बात सामने आई कि मेडिकल कॉलेज जूनियर डॉक्टरों के ही भरोसे चल रहे हैं क्योंकि सीनियर डॉक्टर अस्पताल में बहुत कम समय के लिए ही आते हैं। ऐसे में गंभीर मरीजों को देखने का दारोमदार भी जूनियर डॉक्टरों पर ही पड़ जाता है। यह तो हुई सरकारी अस्पतालों की बात लेकिन प्राइवेट अस्पतालों की भी अपनी समस्याएँ हैं। दरअसल पिछले कुछ समय से भारत में निजी क्षेत्र में कॉर्पोरेटनुमा मेडिकल कॉलेजों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है जिनमें फीस के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भारी भरकम रकम वसूल की जाती है। ऐसे कॉलेजों से डॉक्टर बनकर निकलने वाले चिकित्सकों की मानसिकता को सहज ही समझा जा सकता है। देश में ऐसे भी अनेक मामले आए हैं जब फाइव स्टार सुविधाओं से युक्त कॉरपोरेट कल्चर वाले अस्पतालों से मोटी रकम वसूलने के लिए इलाज में बिना मतलब की दवाइयां और जाँचे करवाना या फिर पूरा बिल चुकाए बिना परिजनों को मरीज का शव न सौंपना जैसी घटनाएं सामने आई हैं। इतना ही नहीं एक रिपोर्ट में यह बात भी सामने आई थी कि इलाज की रकम बढ़ाने के लिए अनेक मामलों में डॉक्टर जानबूझकर नॉर्मल डिलीवरी के बजाए ऑपरेशन करते हैं। यह बात सही है कि हर डॉक्टर ऐसा नहीं होता लेकिन यह भी सच है कि ऐसे मुट्ठी भर डॉक्टर भी पुरे चिकित्सा जगत को बदनाम करने के लिए काफी होते हैं। लेकिन इसका मतलब कतई नहीं है कि इन तर्कों से डॉक्टरों के प्रति हिंसा को जायज ठहराया जा रहा है। नहीं, कदापि नहीं। हिंसा हर हाल में अस्वीकार्य होनी चाहिए। लेकिन इस प्रश्न का उत्तर तो एक सभ्य समाज के रूप में स्वयं हमें ही खोजना होगा कि जिस चिकित्सक को इस समाज में वो सम्मान प्राप्त था कि उसे ''धरती के भगवान'' का दर्जा दिया गया था, आज उसका अपमान करने के संस्कार इस समाज में कहां से आए। इस विषय पर पूरे चिकित्सक समाज को भी आत्ममंथन करना चाहिए कि उनके प्रति समाज में विद्रोह का जो अंकुर फूटा है कहीं वो अनजाने में उन्हीं के आंगन से नहीं उपजा? क्योंकि जिस प्रकार की एकता पूरे देश के चिकित्सकों ने इस मामले में दिखाई है उस प्रकार की एकता अगर इन्होंने उन मामलों में भी दिखाई होती जब मरीजों के साथ अन्याय हुआ था और उन मुट्ठी भर डॉक्टरों को इस दिव्य सेवा से बेदखल करके उनका विरोध करते जिनके लालच ने सेवा को पेशा बना दिया तो निश्चित ही अपनी गरिमा बनाए रखते। लेकिन अब जब इस प्रकार की घटनाएं दोनों ही ओर से आम हो चली हैं तो सरकार को ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए और डॉक्टरों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समस्या की जड़ का समाधान करने हेतु ठोस उपाए अपनाने होंगे। इसी प्रकार डॉक्टरों को भी अपनी गरिमा बनाए रखने के लिए वर्तमान हालातों को देखते हुए नए सिरे से खुद ही अपने लिए एक नई आचार संहिता बनानी चाहिए, जिससे नए डॉक्टर चिकित्सा को सेवा धर्म का जरिया समझें मात्र धन कमाने वाला पेशा नहीं।

आपातकाल

— प्रशांत पोळ

25 जून 1975 की वह काली रात। दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में, लोकतंत्र का गला बर्बरता के साथ घोटने का विषैला कार्य प्रारंभ हो चुका था। राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने धारा 352 (1) के अंतर्गत देश में आतंरिक आपातकाल लागू किया। उन्हें तो, उस आदेश पर हस्ताक्षर करने के मात्र तीस मिनट पहले तक यह मालूम ही नहीं था कि, देश में आपातकाल लगने वाला हैं।

आपातकाल याने आपके/हमारे विचार करने पर संपूर्ण पाबंदी। जो कुछ विचार होगा, सोच होगी वह केवल और केवल सरकार की। अर्थात प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की। आप और हम न तो कुछ लिख सकते थे, न बोल सकते थे, समाचार पत्रों का एक एक अक्षर, छपने से पहले जांचा जाता था। अगर लिखा हुआ सरकार के विरोध में हैं, ऐसा दूर दूर तक भी अंदेशा आया, तो तुरंत उसे निकाल दिया जाता था। सभा/जुलूस/बैठकें आदि पर तो सीधा प्रतिबंध था।

26 जून की प्रात: बेला में देश को यह समाचार मिला। इससे पहले ही अधिकतर विरोधी नेताओं को 25 जून की रात को ही बंदी बना लिया गया था। जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी बाजपेयी, मोरारजी देसाई, लालकृष्ण आडवाणी, जॉर्ज फर्नांडिस सारे जेल के अंदर थे। 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा। संघ के सरसंघचालक बालासाहब देवरस जी को भी संघ पर प्रतिबंध लगाने के पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। संघ के अनेक वरिष्ठ कार्यकर्ता जेल की सीखचों में बंद थे। यह आपातकाल 21 महीने चला। 19 महीनों बाद, विजय के आत्मविश्वास के साथ, इंदिरा गाँधी ने, 18 जनवरी 1977 को आमचुनावों की घोषणा की। 21 मार्च, 1977 को लोकसभा चुनावों के परिणामों में यह स्पष्ट हो गया कि, लोकतंत्र का गला घोटने वाली कांग्रेस बुरी तरह से परास्त हुई हैं, अनेक राज्यों में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुला हैं, आपातकाल के तीनों दलाल- इंदिरा - संजय - बंसीलाल चुनाव हार चुके हैं, तब जाकर आपातकाल हटाया गया।

इक्कीस महीने-25 जून 1975 की रात से 21 मार्च 1977 की रात तक। इन इक्कीस महीनों में इस देश को इंदिरा गाँधी नाम के तानाशाह ने बंधक बनाकर रखा था। इन इक्कीस महीनों में पूरे देश में कांग्रेस ने अपना पैशाचिक नग्न नृत्य जारी रखा था। इन इक्कीस महीनों में आपातकाल का विरोध करने वाले अनेक कार्यकर्ताओं की, संघ के स्वयंसेवकों की जाने गयी। कई स्वयंसेवक तो जेल में ही चल बसे। कइयों को तो इतनी नृशंस यातनाएं दी, की वे पूरी जिंदगी अपाहिज बने रहे। वर्धा के पवनार आश्रम में सर्वोदयी कार्यकर्ता, प्रभाकर शर्मा ने, आपातकाल के विरोध में खुद को जिंदा जला दिया। आत्मदाह कर लिया।

इस आपातकाल का निडरता के साथ, निर्भयता के साथ विरोध किया तो संघ के स्वयंसेवकों ने एक जबरदस्त भूमिगत आंदोलन चलाया। भूमिगत पर्चे निकालना, उनका वितरण करनाज 14 नवंबर 1975 से देशव्यापी भव्य सत्याग्रह करना हजारों युवा स्वयंसेवकों द्वारा अपना पुरुषार्थ प्रकट करते हुए देश की जेलों को भर देना। ऐसा बहुत कुछ संघ के सरकार्यवाह माधवराव मुले भूमिगत थे। अनेक वरिष्ठ प्रचारक, कार्यकर्त्ता विपत्तियों की परवाह न करते हुए,दमन की चिंता को दूर रखते हुए, गिरफ्तारी के डर को धता बताकर निर्भयता के साथ

आपातकाल का विरोध कर रहे थे। 21 महीनों का यह कालखंड हमारे लोकतंत्र के इतिहास में, हमारे स्वाधीन भारत के स्वर्णिम इतिहास में एक काला अध्याय हैं। लोकतंत्र की मशाल को सतत प्रज्वलित रखने के लिए इस काले अध्याय का स्मरण करना, इंदिरा गाँधी के, कांग्रेस के उन काले कारनामों को याद करना आवश्यक हैं, ताकि भविष्य में किसी की हिम्मत ना हो इस लोकतंत्र के धधगते मशाल को हाथ लगाने की।

(पृष्ठ ३ का शेष)

कुर्सी के लिए ऐसा कर रहा है तो वह गलत है। ऐसा नहीं होना चाहिये।

संविधान सभा के अपने भाषण में डॉ. भीमराव आंबेडकर साहब ने हम सबको सावधान किया था। उन्होंने कहा था कि अपनी ताकत के बलबूते पर किसी विदेशी ने हमको जीता नहीं है, हमारे आपस के भेदों के कारण, झगड़ों के कारण उसको सहायता मिली। इसके कारण हम परतंत्र हुए।

व्यक्ति का अपना चरित्र जितना शुद्ध होना चाहिए, उतना ही राष्ट्रीय चरित्र भी शुद्ध होना चाहिए। संचलन, सहज होता है पर सबको एक साथ ले कर एक लय में चलना ही राष्ट्रीय प्रवृति है। कभी गलत कदम आगे बढ़े, तो उसे सुधारकर चलना पड़ता है। यही संघ सिखाता है। भारत आगे बढ़ता है, हिन्दू आगे बढ़ता है, इसका अर्थ है कि जितना हम आगे बढ़ेंगे, स्वार्थ की पूर्ति करने वाली ताकतों के रास्ते बंद हो जाएंगे। आज देश आगे बढ़ रहा है, इसे आगे न बढ़ने देने वाली शक्तियां ऐसा नहीं चाहतीं, हमारा हिन्दू समाज, भारतीय समाज आगे बढ़ेगा तो दुनिया की स्वार्थ वाली दुकानें बंद हो जाएंगी।

चरित्र प्रेरणा देने वाला शील है। एकपत्नी व्रत रखने वाले श्रीराम हमारे आदर्श हैं तथा 16108 स्त्रियों की रक्षा करने वाले श्रीकृष्ण भी हमारे आदर्श हैं।

हम कितने भी पराक्रमी हों, हमारे परतंत्रता के काल में भी हमारे पास गुणवंत लोग थे, परंतु व्यक्तिगत चारित्र्य होने के साथ-साथ राष्ट्रीय चारित्र्य होना भी आवश्यक है। विविधता को एकता मानना, बंधुभाव ही मानवता है। हमें समाज में बंधुभाव करने का प्रयास करना होगा। भारत बलवान हुआ, इसलिए हमें अन्य देशों से समर्थन मिल रहा है।

कार्यक्रम में उपस्थित विशेष आमंत्रित अतिथि पू. चितरंजन जी महाराज (अगरतला), डॉ. कृष्णास्वामी जी (कोयम्बतूर), श्री श्रीनिवास जी (गोवा), गोपालकृष्ण जी (बंगलुरु), सेवानिवृत्त आई.एफ.एस. रमेश चंद्र जी (जालंधर), श्री यशराज जी एवं श्री युवराज जी (दिल्ली)।

गुणकारी है अजवायन

प्राचीन काल से ही अजवायन का प्रयोग भारतवर्ष में औषधि के रूप में हो रहा है। इससे अन्न का पाचन ठीक होता है, भूख ठीक लगती है। गर्भाशय की शुद्धि एवं पीड़ा दूर होती है। प्रसूति के बाद स्त्री को इसका विशेष रूप से सेवन कराया जाता है। अजवायन में चिरायते का कटुपौष्टिक गुण, हींग का वायुनाशक और काली मिर्च का अग्नि दीपन गुण इसमें होता है। इसी कारण इसे कहा जाता है **एका यवानी शतमन्नपातिका**— अर्थात् अकेली अजवायन ही सैकड़ों अन्न को पचाने में सक्षम है। दूध यदि ठीक से नहीं पचता हो तो दूध पीकर ऊपर से थोड़ी अजवायन खा लेनी चाहिये। यदि गेहूँ का आटा, मिष्ठान आदि न पचता हो तो इसमें अजवायन का चूर्ण मिलाकर खाना चाहिये। शरीर में कहीं पर भी वेदना होती हो तो इसे पानी में पीसकर लेप करें और ऊपर से धीरे-धीरे सेंक दें। अजवायन को आग में डाल कर धूपित करने से, अंगदर्द दूर होकर पसीना आता है, एवं देह शुद्धि हो जाती है। दो या तीन ग्राम अजवायन का चूर्ण गर्म पानी में दिन में दो या तीन बार लेने से जुकाम, सिर दर्द, नजला, मस्तकशूल, कृमि रोगों में लाभ होता है। दस ग्राम अजवायन चूर्ण में पांच ग्राम फिटकरी मिलाएँ और दही या छाछ में मिलाकर बालों में मलने से लीखें तथा जुएँ मर जाते हैं।

इस माह में किए जाने वाले कृषि कार्य

धान फसल :

- धान की मध्यम व देर से पकने वाली प्रजातियों की रोपाई पहले पखवाड़े में, शीघ्र पकने वाली किस्मों की रोपाई दूसरे पखवाड़े में, तथा सुगंधित किस्मों की रोपाई अन्तिम पखवाड़े में कर दे।
- धान की रोपाई से पूर्व 25 कि.ग्रा./हेक्टेयर की दर से जिंक सल्फेट खेत में मिला दे परन्तु ध्यान रखे कि फास्फोरस वाले उर्वरकों के साथ जिंक सल्फेट कभी भी न मिलाएँ।
- धान में खैरा रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रति हेक्टेयर 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट व 2.5 कि.ग्रा. चूना 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

सब्जियाँ :

- भिण्डी, सेम, लोबिया, चौलाई तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों की निम्न प्रजातियों की बुआई करें।
- लोबिया—पूसा सुकोमल
- लौकी—पूसा नवीन, पूसा संतुष्टि, पूसा हाईब्रिड-3
- करेला—पूसा दो मौसमी, पूसा औषधि, पूसा हाईब्रिड-3
- चिकनी तोरई—पूसा स्नेहा
- धारीदार तोरई—पूसा नूतन
- पेठा—पूसा उज्ज्वल, पूसा उर्मी, पूसा श्रेयाली

फल फसलें :

- आम की आम्रपाली, मल्लिका, दशहरी, पूसा सूर्य व पूसा अरुणिमा किस्में तोड़ने के लिए तैयार हो जाती है। फलों को इथेल के घोल (1.8 मिली प्रति लीटर गुनगुने पानी में) में 5 मिनट रखकर समानरुप से पकाएँ।
- आम, अमरूद तथा पपीते में फल मक्खी की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोपिड 3 मिली. दवा 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे तथा मिथाईल युजिनोल फेरामोन ट्रेप का प्रयोग करें।
- नीबू वर्गीय फलों के पेड़ों में जड़ गलन तथा फाइटॉपथोरा बीमारी की रोकथाम के लिए पौधों की जड़ों में रिडोमिल 2.5 ग्राम। लीटर पानी में घोलकर तथा अलीटे 60 से 120 ग्राम 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

अरहर :

- अरहर की उन्नत किस्मों की बुआई करें।
- एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 10 से 15 किलो बीज की आवश्यकता होगी।
- राइजोबियम कल्चर से उपचारित बीज 60-75×15-20 सेमी की दूरी पर बोएँ।
- अरहर की प्रमुख किस्में : पूसा 991, पूसा 992, पूसा 2001 व पूसा 2002 है।
- उपरोक्त सभी किस्में 140 से 145 दिन में पक जाती है, जो दोहरे फसल-चक्र के लिए उपयुक्त है।

बाजरा :

- बाजरे की बुआई 15 जुलाई के बाद पूरे माह की जा सकती है।
- एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 4 से 5 किलो बीज की आवश्यकता होगी ।
- बाजरे की प्रमुख किस्में पूसा 322, पूसा 323 है।

मानस प्रसंग गतांक से आगे —

गोस्वामी तुलसीदास जी आगे लिखते हैं कि, नारद जी ने भगवान का स्मरण कर पार्वती को आशीर्वाद दिया और ब्रह्मलोक को चले गये। उनके जाने के बाद एकांत में पार्वती की माता मैना ने अपने पति से कहा कि, मुझे तो नारद जी की बातें समझ में नहीं आयीं। पार्वती मुझे प्राणों के समान प्रिय है, इसलिये यदि उसके अनुकूल घर, वर और उत्तम कुल मिले तो उसका विवाह करना, अन्यथा वह भले ही कुवांरी ही रहे, यदि उसे योग्य वर न मिला तो सब हमें ही मूर्ख कहेंगे, इसलिये सोच-विचार कर ही निर्णय लेना ताकि बाद में पश्चाताप न करना पड़े। ऐसा कह कर चरणों में गिर पड़ी मैना को समझाते हुए पर्वतराज हिमालय ने कहा कि, भले ही चन्द्रमा में अग्नि प्रगट हो जाये, किन्तु नारदमुनि के वचन असत्य नहीं हो सकते। पर्वतराज आगे समझाते हैं कि—

प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान॥

अर्थात् सब चिंता को त्याग कर भगवान का स्मरण करो, जिन्होंने पार्वती को बनाया है वे ही इसका कल्याण भी करेंगे। अब अपनी प्यारी कन्या पर स्नेह है तो उसे यह सिखाओ कि वह ऐसी तपस्या करें, जिसे उसे शिव जी मिल जायें, दूसरे किसी उपाय से यह क्लेश नहीं मिटेगा। नारदमुनि के वचन रहस्यमय और सकारण है तथा भगवान शंकर सभी सुन्दर गुणों के भण्डार है, वे निष्कलंक है, ऐसा सोच कर अपने संदेह को त्याग दो।

गोस्वामी जी आगे लिखते हैं कि, पति के ऐसे वचनों से प्रसन्न होकर मैना तुरंत पार्वती के पास गई और स्नेह के साथ उसे गोद में बिठा लिया। प्रेम-विह्वल होकर बार-बार हृदय से लगाने लगी किन्तु कुछ कहा नहीं जा रहा था। अपनी माता के मन की दशा समझकर जगद्जननी सर्वज्ञ भवानी सुख देने वाली कोमल वाणी से बोली —

सुनहि मातु मैं दीख अस सपन सुनावउँ तोहि।
सुंदर गौर सुबिप्रवर अस उपदेसेहु मोहि॥

अंक में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है। संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। न्यायालय क्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

राष्ट्र जागरण में सहयोग करें

राष्ट्रीय साहित्य उपहार में दें...

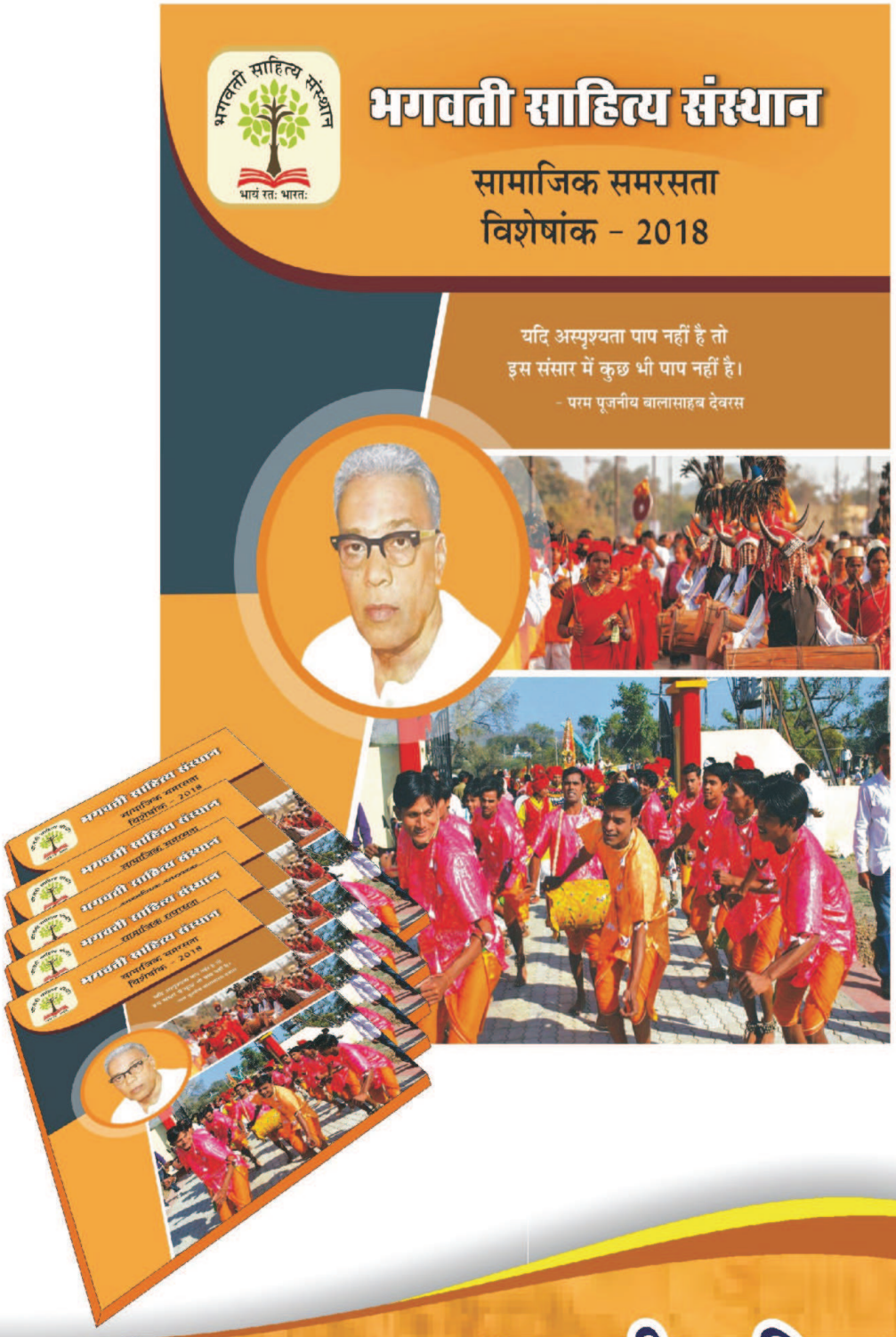

पढ़िए एवं
पढ़ाइए,
हर घर
पहुंचाइए

भगवती साहित्य संस्थान

स्वदेशी भवन, राम मंदिर मार्ग, रायपुर, छत्तीसगढ़

आर.एन.आई. पंजी. क्र.-६६६३५/९५ डाक पंजीयन संख्या-छ.ग./रायपुर संभाग ०६/२०१८-२०

इस माह की स्मरणीय विभूतियाँ

गुलजारीलाल नंदा
जयंती ०४ जुलाई

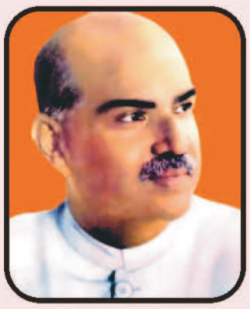

पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी
जयंती ०६ जुलाई

गुरुदत्त
जयंती ०९ जुलाई

गोपाल गणेश आगरकर
जयंती १४ जुलाई

मंगल पांडे
जयंती १९ जुलाई

डॉ. खूबचंद बघेल
जयंती १९ जुलाई

लोकमान्य तिलक
जयंती २३ जुलाई

चन्द्रशेखर आजाद
जयंती २३ जुलाई

सुधीर फड़के
जयंती २५ जुलाई

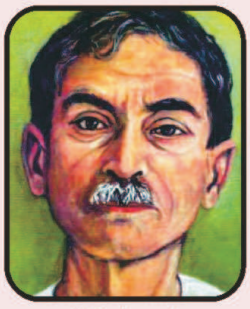

मुंशी प्रेमचंद
जयंती ३१ जुलाई

प्रेषक,
शाश्वत राष्ट्रबोध
गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर,
रायपुर छ.ग. पिन - ४९२००१
फोन नं. - ०७७१-४०७२०७०

शाश्वत राष्ट्रबोध - मासिक पत्रिका
माह - जुलाई २०१९

प्रति,

.....

.....

.....

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक नरेन्द्र जैन, जागृति मण्डल, गोविन्द नगर, रायपुर द्वारा गुप्ता ऑफसेट से छपवाकर
शाश्वत बोध विकास समिति, गद्रे स्मृति भवन, जवाहर नगर, रायपुर से प्रकाशित।
संपादक - नरेन्द्र जैन, कार्यकारी संपादक - महेश कुमार शर्मा, E-mail : rashtrabodh.sangh@gmail.com

डाक टिकट

Composed & Designed : Avinash # 98263-31427